

चाहे कोई जाए या ना जाए, मैं राम मंदिर जरूर 'प्राण प्रतिष्ठा' कार्यक्रम में हर हाल में पहुंचेंगे भज्जी, बोले- जिसको जो करना है कर ले

टीम इंडिया के पर्प गेंदबाज और आम आदाम पाटी के राज्यसभा संसद हरभजन सिंह ने साफ किया है कि वह राम मंदिर के प्रतिष्ठा' कार्यक्रम में हर हाल में

लेने जरूर जाएं। हरभजन का कहना है कि कौन सी पाटी गई और कौन सी नहीं इस बात से अधिक कोई लोग जुँहे। चाहे वहां जाकर या फिर टीवी के माध्यम से, पर उन्हें कोई लेना-देना नहीं है। हरभजन सिंह ने एनआई के साथ

सम्पादकीय

नेताजी ने न सिर्फ हिंदी
सीखी, कांग्रेस और आजाद
हिंद फौज में बढ़ावा भी दिया

नेताजी जानते थे कि ही समूहे भारत को जोड़ सकती है। उन्होंने हिंदी तो सीखी ही, फिर कांग्रेस और आजाद हिंद फौज में हिंदी को बढ़ावा भी दिया। हिंदी के विकास में बंगाल, विशेषकर कोलकाता का योगदान बहुत ज्यादा है। हिंदी ही भावी भारत की संपर्क भाषा होगी, यह विचार पहली बार बंगाल की धरती के ही आचार्य केशवचंद्र सेन ने 1875 में दिया था। कोलकाता की ही धरती पर 1830 में पहला हिंदी अखबार निकला। कोलकाता में 26-28 मार्च, 1929 को हिंदी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन हुआ था। उसकी स्वागत समिति के अध्यक्ष नेताजी सुभाष चंद्र बोस ही थे, जिन्होंने हिंदी में भाषण दिया था। उन्हें पता था कि हिंदी के विकास में कोलकाता का क्या स्थान है। तब कोलकाता में करीब पांच लाख

गया और दिल्ली-खोलकर लोग इसे सीखेंगे, तो आने वाले दिनों में प्रांतीय वैचारिक खाइयों को पाठने में हिंदी ही मददगार होगी। वर्ष 1938 में हरिपुरा कांग्रेस अधिवेशन में अध्यक्ष चुने जाने के बाद नेताजी ने हिंदी में ही भाषण देते हुए कहा था, 'यदि देश में जनता के साथ राजनीति करनी है, तो उसका माध्यम हिंदी ही हो सकती है। बंगाल के बाहर मैं जनता में जाऊं तो किस भाषा में बोलूँ? इसलिए कांग्रेस का सभापति बनकर मैं हिंदी खूब अच्छी तरह न जानूँ तो काम नहीं चलेगा।' इसलिए उन्होंने हिंदी सीखने पर जोर दिया। इसके लिए उन्होंने लक्ष्मीनारायण तिवारी नाम के सज्जन से हिंदी सीखी। आजाद हिंद फौज में भी उन्होंने हिंदुस्तानी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया। नेताजी समझते थे कि जिस देश के पास अपनी



स्थाने और हिंदी के प्रति कोई आग्रह न रखने को लेकर अपील भी की थी। उन्होंने महात्मा गांधी समेत हिंदी साहित्य सम्मेलन के लोगों से भी अपील की थी कि मद्रास प्रांत की तरह वे बंगाल और असम में भी हिंदी के प्रचार का प्रबंधन करें। उन्होंने कोलकाता और बंगाल में हिंदी पढ़ाने के लिए लोगों से कहा भी था। उन्हें उम्मीद थी कि इसकी वजह से बहुत सारे बंगाली छात्र हिंदी पढ़ने के लिए तैयार हो जाएंगे। उन्होंने बंगाल के छात्रों को छात्रवृत्ति देकर हिंदी का प्रचारक बनाने का भी प्रस्ताव दिया था। नेताजी उन दिनों मजदूरों के बीच भी काम कर रहे थे। तब उन्हें समझ आया कि आम बोलचाल की भाषा के बिना बुनियादी स्तर पर सहज संपर्क स्थापित नहीं किया जा सकता। उन्होंने आशा जताई थी कि यदि तन-मन-धन से प्रयत्न किया गया, तो वह दिन दूर नहीं, जब भारत स्वाधीन होगा और उसकी राष्ट्रभाषा होगी हिंदी। नेताजी को लगता था कि अगर हिंदी को सहज संपर्क भाषा के रूप में अपना लिया

पुलस अधाक्षक न अयाध्या म भगवान श्रा राम मान्दर प्राण प्रतिष्ठा कार्यकम हेतु मिज़ापुर में व्यवस्था हेतु किया प्रबंधन मेज़र्प। आगामी दिनांक वैधानिक/निरोधात्मक कार्यवाही निस्तारण करने का निर्देश दिया। के क्रम मे उत्तर प्रदेश के कैबिनेट पौछा लगाया। सफाई अभियान बनकर तैयार है जहां पर प्रा

20.01.2024 को श्री अयोध्या धाम मयोद्धा में आयोजित होने वाले श्री राम मन्दिर प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम के अवसर पर जनपद की नुरक्षा/कानून व्यवस्था एवं साम्राज्यिक सौहार्द बनाये रखने के लिए निमित पुलिस अधीक्षक भभिन्नदन ने जनपद मीरजापुर के सभी थाना क्षेत्रांतर्गत प्रमुख मार्गों/पौराहो, धार्मिक स्थलों एवं मिश्रित बाजारी क्षेत्र में सुदृढ़ पुलिस प्रबन्धन कर सतर्कता/नीगरानी रखी रखने का निर्देश दिया। उन्होंने बताया कि चिह्नित स्थानों पर पुलिस एपेक्टस एवं मोबाइल गस्त पार्टिया ली लगाई गयी है। बाजार, स्कूल/गालेजों एवं भीड़-भाड़ वाले स्थानों पर एन्टीरोमियों स्कॉड को प्रमणशील रखा गया है तथा श्री मयोद्धा धाम जाने वाले श्रद्धालुओं का आवागमन के मार्गों पर सुगम एवं सूचारू यातायात व्यवस्था बनाये रखने हेतु आवश्यक प्रबन्ध किया गया है। उन्होंने कहा कि किये जाने के निर्देश दिया गया उन्होंने कहा कि उक्त परिपेक्ष प्रचलित स्वच्छता अभियान व अन्तर्गत जनपद पुलिस द्वारा पुलिस के सभी कार्यालय/पुलिस लाइन्स थाना/चौकी एवं अन्य पुलिस परिसर में साफ-सफाई के कार्य किया जा रहा है। साथ ही जनपद पुलिस के सभी भवनों, कार्यालयों और सजावटी लाइट लगायी जा रही है। उन्होंने कहा आगामी दिनांक 22.01.2024 को सभी कार्यालय परिसर में दीप जलाये जायेंगे। इससे सम्बन्धित सास्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किया जायेगा। पुलिस अधीक्षक अभिनन्दन ने उक्त अवसर पर जनपद मीरजापुर पुलिस जनपद वासियों से सुरक्षा/कानून व्यवस्था बनाये रखने हेतु सहयोग की अपील किया। एवम सभी जनपद वासियों को इस अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं दिया।

(2) समाधान दिवस पर

भिसूचना तंत्र को सक्रिय करते हुए जगह-जगह अभिसूचना कार्मियों की ड्यूटी भी लगाई गयी है। इन आगाना प्रभारीयों एवं अन्य पुलिस अधिकारियों को निरन्तर अपने आगाना/सर्किल क्षेत्र में भ्रमणशील होते हुए सरक्ता, सुरक्षा/कानून व्यवस्था बनाये रखने के साथ-साथ केसी प्रकार के अफवाहों आदि का गत्काल तथ्यपरख खण्डन करने वाले शरारती तत्वों पर सतत देखायानी उसके द्वारा समर्पित

मायावती की मजबूरी के बीच अप्रासंगिक हो रही पार्टी, वजह वे कुछ भी बताएँ

मायावती आगामी लोकसभा चुनाव अकेले लड़ने की वजह कुछ भी बताएं, सच यह है कि विपक्षी गठबंधन के सहयोगियों और खुद अपनी पार्टी के लोगों को संशय में डालने वाली उनकी अप्रत्याशित राजनीति के चलते एक ऐतिहासिक अतीत वाली पार्टी राजनीतिक फलक पर तेजी से अप्रासांगिक होती दिख रही है। बहुजन समाज पार्टी (बीएसपी) सुप्रीमो मायावती ने हाल ही में आगामी लोकसभा चुनाव अकेले लड़ने की घोषणा की है। वह इसकी वजह बेशक यह बता रही है कि चुनाव पूर्व संसदीय और विधानसभा चुनाव की तरह सत्तारूढ़ दल की रणनीति तो यही है कि ज्यादा से ज्यादा दलित और मुस्लिम वोटों को अपने पक्ष में करने और विपक्ष के एकीकरण की कोशिशों को कमजोर करने में कैसे बसपा का उपयोग किया जाए। 'फूटू डालो और राज करो' वाली यह रणनीति हाल के समय में काफी प्रभावी रही है, लेकिन अब दलित व मुस्लिम समुदायों में यह बात तेज़ी से फैल रही है कि बसपा को वोट देने से अप्रत्यक्ष रूप से भाजपा को फायदा हो सकता है, और यही वजह है कि अब

से दस पर पहुंच गई, जबकि सपा की सीटें आधी होकर पांच ही रह गई। अगर कांग्रेस ने राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में हाल के विधानसभा चुनावों में अच्छा प्रदर्शन किया होता, तो वह अखिलेश को मनाने की स्थिति में होती कि वह मायावती को गठबंधन में शामिल करने पर पुनर्विचार करें। लेकिन राज्य विधानसभा चुनावों में भाजपा से हार के बाद कांग्रेस की सौदेबाजी की ताकत कम हो गई है। इसके अलावा, मध्य प्रदेश में कांग्रेस द्वारा सपा के साथ गठबंधन करने से इन्कार

चुनाव लड़ती है। अगर पिछले संसदीय चुनावों पर नजर डालें, तो कहानी स्पष्ट होती है, जिसमें बसपा ने सपा के साथ गठबंधन में उत्तर प्रदेश की 80 लोकसभा सीटों में 19.4 फीसदी वोट शेयर के साथ 10 सीटें हासिल की थीं, हालांकि उन्होंने कुल सीटों की आधी से भी कम पर चुनाव लड़ा था। तीन साल बाद 2022 में राज्य विधानसभा चुनाव में सभी 403 सीटों पर लड़ते हुए उनकी पार्टी को केवल एक सीट मिली और उसका वोट शेयर गिरकर 13 फीसदी पर पहुंच गया। इसमें कर्तव्य संदेह नहीं कि

11, अ.सं.प्र. १८



ओर सहयोगियों का फायदा पहुँचाएगा, लेकिन यह बात गले नहीं उत्तरती और उनकी मजबूरी को ही दर्शाती है। दरअसल, कभी बसपा के गढ़ माने जाने वाले उत्तर प्रदेश में न तो सत्तारुद्धराष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) और न ही विपक्षी दलों का समूह 'इंडिया' गठबंधन अप्रत्याशित व्यवहार करने वाली बहनजी के साथ गठजोड़ करने वें लिए तैयार हैं; जिनकी राजनीतिक महत्वाकांक्षा राज्य में उनकी घटती लोकप्रियता से तालमेल नहीं बैठा पा रही है। कुछ दूसरे राज्यों में भी यही कहानी है, जहां बसपा की मौजूदगी तो है, लेकिन उसका प्रभाव तेजी से क्षीण हो रहा है। फिर भी, संभावित सहयोगियों के साथ सीट बंटवारे के लिए कड़ी सौदेबाजी जारी है। भाजपा के नेतृत्व वाले राजग ने, जो इस वक्त लोकसभा चुनाव के मद्देनजर पूरी तरह से मजबूत स्थिति में दिख रहा है, बसपा के साथ गठबंधन करने में कोई रुचि नहीं दिखाई है। इसके बजाय, पिछले

समर्थकों का छिटकन का एक मुख्य वजह यह रही है कि अब उन्हें लगाने लगा है कि वह शोषित वर्ग की नेता नहीं, बल्कि स्वेच्छा से या मजबूरी में, उत्तर प्रदेश में भाजपा की वोट मशीन की मददगार बन गई हैं। जहां तक 'इंडिया' गठबंधन का सवाल है, कंग्रेस नेतृत्व शुरू से ही बहन जी को उन सभी पार्टियों के संयुक्त मोर्चे में शामिल करना चाहता था, जो भाजपा के खिमे में नहीं थीं। हालांकि समाजवादी पार्टी के नेता अखिलेश यादव ने इसका कड़ा विरोध किया था। उन्होंने दरअसल मायावती को लेकर तब से ही कड़ा रुख अपनाया हुआ है, जब 2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा की जीत के तुरंत बाद मायावती ने सपा के साथ बनाए गए अपने राजनीतिक गठबंधन को एकाएक तोड़ दिया था। मायावती द्वारा उठाया गया यह कदम उन्हें तब और भी व्यथित करता है, जब सपा के साथ उनके गठबंधन की वजह से 2014 की तलना में 2019 में बसपा की सीटें शून्य

ही, उन्हान बसपा के मामल में भी अपने हाथ खींच लिए। हालांकि बसपा के बड़ी संख्या में मुस्लिम सांसदों का बहन जी पर दबाव था कि वह 'इंडिया' के साथ मिलकर चुनाव लड़ें, लेकिन बहन जी की अपनी मजबूरी थी। पहली नजर में यही लगता है कि विपक्षी गठबंधन में बसपा की अनुपस्थिति उत्तर प्रदेश में उसकी संभावनाओं को क्षीण करेगी। दूसरी तरफ, ज्यादातर मुस्लिम समर्थकों और खुद मायावती की उपजाति जाटव सहित दलितों में उन्हें लेकर जिस तरह मोहभंग की प्रवृत्ति दिख रही है, उससे यही लगता है कि उत्तर प्रदेश में बसपा कोई बड़ी राजनीतिक शक्ति नहीं रह गई है। अगर बहन जी को विपक्षी गठबंधन में कई दलों के बीच सीटों के बंटवारे की चुनौती में उलझाया जाता, तो यह नामुमकिन नहीं, तो बेहद कठिन चुनौती जरूर होती। हालांकि मायावती का यह दावा भी ठीक नहीं है कि उनकी पार्टी गठबंधन के बजाय अकेले ज्यादा बेहतर

मायावती और बसपा का राजनीतिक कद काफी घट गया है। दूसरी तरफ समाजवादी पार्टी है, जिसने राष्ट्रीय लोकदल के साथ मिलकर चुनाव लड़ा और भाजपा की लहर के बावजूद 111 सीटें और 32 फीसदी वोट के साथ एक विश्वसनीय टक्कर जरूर दी। विधानसभा चुनाव के नतीजे ने देश की सबसे ज्यादा आबादी वाले और राजनीतिक तौर पर महत्वपूर्ण राज्य में भाजपा खेमे के बाहर विपक्षी राजनीतिक दलों वें साथ सौदेबाजी की स्थिति में बहन जी की स्थिति अखिलेश की तुलना में चाहिए है कि कमज़ोर की है। ऐसे में, मायावती को 'इंडिया' गठबंधन से बाहर रखने में अखिलेश की निर्णायक भूमिका रही हो, तो इसमें आशर्च्य नहीं होना चाहिए। अब इन स्थितियों को अपने पक्ष में दिखाते हुए इसे उपलब्धि की तरह पेश करना मायावती की मजबूरी थी। कुछ भी हो, उत्तर प्रदेश में विपक्षी दलों के गठबंधन के सामने से सले से कम होने वाली नहीं।

भारतीय सभ्यता के नाथक रामचरितमानस का अनुपम उपहार

रामचरितमानस के राम भारत राष्ट्र के पुनरुत्थान के नायक हैं। वह तुलसीदास ही हैं, जिन्होंने राम के प्रति अदृष्ट श्रद्धा की नींव रखी। इस तरह समाज को रामचरितमानस का अनुपम उपहार देकर तुलसीदास भारतवर्ष के भविष्य की भी रचना कर गए हैं। भारतीय इतिहास की पृष्ठभूमि में एक ऐसा नाम है, जो मुगल काल में सनातन पहचान और सांस्कृतिक संरक्षण के प्रति अदृष्ट प्रतिबद्धता की मूर्ति के रूप में उभरता है, वह है गोस्वामी तुलसीदास का। उनके महाकाव्य रामचरितमानस ने सनातन धर्म का उस समय पुनर्जगण दिया, जब भारत में मुगलों की तूती बोलती थी। आज के दिन, जब राम की जन्मस्थली अयोध्या में पांच सौ वर्षों बाद राम मंदिर सनातन धर्म की महिमा का प्रतीक बन गया है, जब चारों दिशाएं 'जय श्रीराम' के नारों और राम भजनों से गूंज रही हैं और हवाओं में केसरिया रंग घुला है, तब यह आवश्यक हो गया है कि हम हर्ष-उल्लास के इस अद्भुत कालखंड में गोस्वामी तुलसीदास को भी अपनी स्मृतियों में संजोएं, जिन्होंने राम को देश के कण-कण में व्याप्त कर दिया। उन्हें भारतीय सभ्यता के सबसे बड़े नायक के रूप में जन-जन के रोम-रोम में स्थापित कर दिया। तुलसीदास का असाधारण योगदान न केवल उनके कृतित की साहित्यिक प्रतिभा में है, वरन् भारतीय समाज के ताने-बाने पर मुगल प्रभाव को थोपने के विरुद्ध उनके दृढ़ दृष्टिकोण में भी है। तुलसीदास ने जान-बूझकर मुगलों की भाषा और अपसंस्कृति के प्रतीकों को रामचरितमानस से बाहर



शताब्दी में की थी। माना जाता है कि उन्होंने 1574 और 1576 के बीच इस कृति का सुजन किया। हालांकि विभिन्न ऐतिहासिक विवरणों के हिसाब से इसका सटीक समय थोड़ा भिन्न हो सकता है, पर सनातन मान्यताओं को अविरल रूप से सीधी रामचरितमानस एक कालजयी और श्रद्धेय कृति बनी हुई है और निःसंदेह विश्व में सर्वाधिक पढ़ी और गाई जाने वाली मुगल अपरसं स्वृग्ति के प्रति अवज्ञा को देखते हुए गोस्वामी तुलसीदास को सच्चे अर्थों में 'राष्ट्र जनवर' कहना अतिशयोत्तिः नहीं होगा। रामचरितमानस के माध्यम से उन्होंने जो सांस्कृतिकवाक् कायाकल्प किया, वह उन्हें सनातन धर्म के इतिहास और विदेशी प्रभुत्व के विरुद्ध संघर्ष में एक महान व्यक्ति बनाता है।

आभनय के लए सम्मान
अवार्ड वगैरह तो मिलेगा ही
कछ साल पहले जब मंडर्ड से मेरे सब युँ ही नहीं हआ है !! इसमें

अभिनय करियर की शुरूआत हुई थी, तो मैंने सोचा था कि अगर अच्छा काम किया तो समय के मेरी महनत के साथ साथ माता पिरा का आशीर्वाद भी शामिल है ! मैं अपना वाग्धारा सम्पान



लेकिन किसी प्रतिष्ठित सम्मान समारोह में जज बनने के अवसर मिलेगा और महामहिम राज्यपाल द्वारा सम्मानित किया जाएगा ऐसा नहीं सोचा था , लेकिन ऐसा हुआ वाधारा सम्मान समारोह में !! ईश्वर की कृपा और अपने चाहनेवालों की दुआओं से पिछले दो सालों से सम्मान और अवॉर्ड्स का सिलसिला अभी भी जारी है !! मुझे नहीं मालूम कि मैं इन सब के योग्य हूँ या नहीं !! लेकिन ये जरूर जानती हूँ , ये है !! और उनसे बाद करती हूँ कि मैं आगे भी अपनी मेहनत में कोई कोर कसर नहीं रख छोड़ूँगी !! आप सब मेरा हौसला ऐसे ही बढ़ाते रहे !! और आखिरी में साबरी ब्रदर्स की इन लाइनों के साथ अपनी बात परी करती हूँ !! जो मेरे भावों की सही अधिव्यक्ति भी है !! ये सब तुम्हारा करम है दाता की बात अब तक बनी हुई है , मैं इस करम के कहाँ था काबिल हुजूर की बांदा -परवरी है ।

